P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-5* January- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

भूगोल शिक्षण विधियों की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

कुसुम कान्ति कुजूर
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त)
विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छ.ग., भारत

अनिता सिंह
शोध निर्देशिका,
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग
पं. सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त)
विश्वविद्यालय,
बिलासपुर, छ.ग., भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य भूगोल विषय के अध्यापन हेतु प्रभावशाली विधि जानना है। भूगोल विषय के शिक्षक को भूगोल के विभिन्न प्रकार के विषय वस्तु के लिये उपयुक्त शिक्षण विधि का चयन करना चाहिए। शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु कक्षा में उद्देश्यन्मुख गतिविधियाँ करना चाहिए। ताकि शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति निर्धारित समय में हो सके। प्रस्तुत शोध में प्रयोगात्मक विधि का अनुकरण किया गया है। भूगोल शिक्षण विधि की प्रभावशीलता जानने के लिए बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण हेतु प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकी गणना हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया।

मुख्य शब्द : बी.एड. प्रशिक्षक, भूगोल शिक्षण विधि, प्रभावशीलता।

प्रस्तावना

भूगोल एक प्राचीन विषय है। मानव जिस स्थान पर रहता है उसके विषय जानने की लालसा हमेशा से रही है। पृथ्वी के दूसरे भागों में रहने वाले लोगों का खान–पान, निवास, वेश–भूषा, रीति–रिवाज, रहन–सहन जानने की जिज्ञासा प्राचीन है। मनुष्य अपनी उत्सुकता व जिज्ञासा के कारण निरन्तर प्रयत्नशील रहा है। इसी उहापोह से भूगोल का उद्भव हुआ।

भूगोल का स्वरूप तथा दृष्टिकोण समय के साथ परिवर्तित होता रहा है। प्राचीन समय में भूगोल का उद्देश्य कुछ और था, वर्तमान रूप कुछ और दिखाई देता है। भूगोल वह विज्ञान नही जो केवल भौतिक तथ्यों का मनुष्य के ऊपर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करता है, बल्कि मानव एवं प्रकृति एक–दूसरे पर क्या प्रतिक्रिया करते हैं, का अध्ययन किया जाता है। जेम्स फेयरग्रीव के शब्दों में ''भूगोल का कार्य भावी नागरिकों को इस प्रकार प्रशिक्षित करना है, जिसके आधार पर वे विशाल रंगमंच की दशाओं की ठीक–ठीक कल्पना कर सकें, ताकि वे निष्पक्ष रूप से अपने चारों ओर होने वाली विश्व की सामाजिक एवं राजनीतिक समस्याओं पर विचार कर सकें।

शिक्षा की अलग–अलग शाखाएं किसी न किसी सीमा तक शिक्षा के सर्वमान्य उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायक होते है। शिक्षा के उद्देश्य ही विभिन्न विषयों के शिक्षण के भी उद्देश्य हैं। किसी भी विषय के अध्यापन से पहले उद्देश्यों का सुस्पष्ट निर्धारण कर लिया जाये तो अध्यापन कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न हो सकता है। अध्यापक द्वारा उद्देश्य प्राप्ति की सीमा ही उसके अध्यापन की योग्यता तथा अध्यापन की सफलता का परिचायक है। शैक्षिक उद्देश्यों से ही शिक्षण विधियों का निर्धारण होता है एवं अध्यापक के दृष्टिकोण की पहचान होती है। अध्यापक की अध्यापन क्षमता तथा अध्यापन की सफलता का पता शैक्षिक उद्देश्य की पूर्ति से चलता है। यदि अध्यापक की शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति हो जाती है तो समझ लिया जाता है कि उसकी शिक्षण विधि उचित है। यदि उसे अपने उद्देश्यों की प्राप्ति नही होती है तो इसे अध्यापक की असफलता माना जायेगा। अतः यहाँ भूगोल के कुछ उद्देश्यों की चर्चा करना आवश्यक है जो निम्नांकित है :–

1. भौगोलिक नियंत्रण का अर्थ स्पष्ट करना।
2. प्राकृतिक साधनों का उचित उपयोग करने हेतु प्रेरित करना।
3. छात्रों में स्वदेश प्रेम की भावना उत्पन्न करना।
4. वातावरण के साथ अनुकूलन का पाठ पढ़ाने सिखाना।
5. ''वसुधैव कुटुम्बकम'' मनुष्यों में सद्भावना, सहानुभूति एवं सहयोग की भावना का विकास करना।

भूगोल की शिक्षण विधियाँ

किसी भी विषय के पढ़ाने के उद्देश्य ही उसकी शिक्षण विधियों को निर्धारित करते है। क्योंकि उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उचित शिक्षण विधियों का होना आवश्यक है। भूगोल शिक्षक के लिये यह आवश्यक है कि उसे केवल पाठ्य वस्तु का ही समुचित ज्ञान न हो, बल्कि उसे शिक्षण विधि का भी स्पष्ट ज्ञान होना आवश्यक है। भूगोल शिक्षक को हर स्तर पर किस विधि द्वारा पढ़ाना है इसका ज्ञान होना अति आवश्यक है। उसे शिक्षण विधि के चयन करने में बालकों की आयु, रूचि एवं योग्यता तथा पाठ्यवस्तु की प्रकृति का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक है। भूगोल शिक्षण की कुछ प्रमुख विधियाँ इस प्रकार है :–

(1) निरीक्षण विधि (2) प्रदर्शन विधि (3) योजना विधि (4) आगमन विधि (2) निगमन विधि (6) भ्रमण विधि
(7) प्रादेशिक विधि

प्रस्तुत अध्ययन में आगमन विधि एवं योजना विधि की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

साहित्यावलोकन

सिंहवाल, सत्येन्द्र (1971) ने अपने अध्ययन वाणिज्य शिक्षण में अभिक्रमित अनुदेशन विधि व परम्परागत विधि का तुलनात्मक अध्ययन में पाया कि अभिक्रमित अध्यापन विधि से शिक्षण अधिक प्रभावशाली रहा।

पी. पेरूमल 1989 ने अध्ययन किया कि व्याख्यान विधि, समूह वार्तालाप विधि तथा दत्तकार्य विधि द्वारा शिक्षण करने पर ज्ञात होता है कि दत्त कार्य विधि कामर्स शिक्षण के लिये सबसे अधिक प्रभावी तथा व्याख्यान विधि सबसे कम प्रभावी विधि है।

रैना पी.के 1990 ने ए क्रिटिकल सर्वे ऑफ हिस्ट्री टीचिंग इन राजस्थान विषय पर समीक्षात्मक अध्ययन किया और पाया कि शिक्षकों द्वारा व्याख्यान विधि का प्रयोग अधिक किया जाता है। मीडिया के अन्तर्गत केवल पाठ्यपुस्तक व श्यामपट का ही प्रयोग होता है।

कौर सुखविंदर (1991) ने अपने अध्ययन – माध्यमिक स्तर पर समाज विज्ञान में विद्यार्थियों की असफलता के कारणों के अध्ययन में पाया कि शिक्षण विधियों की अप्रभावशीलता की वजह से माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थी सामाजिक विज्ञान विषय में असफल हुए।

शकुन्तला (2005) ने अपने अध्ययन, बी.एड. में अध्ययनरत विद्यार्थियों के प्रशिक्षण में नवाचारों की प्रभावशीलता का अध्ययन के अन्तर्गत विभिन्न विधियों का उनके अध्ययन के प्रति रूचि के संदर्भ में अध्ययन किया और पाया कि इन विधियों के प्रयोग से विद्यार्थियों में विषय वस्तु के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनता है। साथ ही यह भी पाया कि विद्यार्थियों में मूल्यों, मान्यताओं, अभिरूचि व अभिवृत्ति का विकास हुआ।

उपरोक्त साहित्य के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि प्रशिक्षार्थियों व शिक्षार्थियों के कौशल विकास तथा सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास में क्रियाशील विधि अधिक प्रभावशाली है। क्योंकि इस प्रकार की शिक्षण विधियों में अधिगमकर्ता भी सीखने के लिये उत्सुक व सक्रिय रहता है।

अध्ययन का औचित्य

अध्यापन को प्रभावशाली बनाने के लिये अध्यापक को निरन्तर प्रयत्नशील रहना पड़ता है। चूंकि भूगोल विषय का ज्ञान तथा उस ज्ञान को सही माध्यम द्वारा अधिगमकर्ता तक पहुँचाना शिक्षक का उत्तरदायित्व है। अध्यापक को उचित शिक्षण विधि चयन कर अध्यापन करना होगा। जिससे निश्चय ही निश्चित समय में शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति होगी। नवीन शिक्षण विधि के प्रयोग से शिक्षार्थियों की बौद्धिक क्षमता के साथ–साथ उनकी मानसिक योग्यता जैसे – चिंतन शक्ति, क्रियाशीलता, तर्क शक्ति, कल्पना शक्ति आदि को सकरात्मक दिशा प्राप्त होता है। प्रभावी शिक्षण साधनों के चयन से ही उपलब्धि स्तर में गुणात्मक वृद्धि लाया जा सकता है।

अध्ययन का उद्देश्य

आगमन विधि एवं योजना विधि की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

परिकल्पना

आगमन विधि एवं योजना विधि की प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नही पाया जायेगा।

शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में भूगोल विषय को पढ़ाने हेतु उपयुक्त शिक्षण विधि जानने के लिये प्रयोगात्मक विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

न्यादर्श के रूप में दो बी.एड. महाविद्यालय के कुल 60 प्रशिक्षार्थियों को सोद्देश्यपूर्ण न्यादर्श के रूप में लिया गया है।

शोध उपकरण

शोधार्थी ने स्वनिर्मित प्रश्नावली द्वारा परीक्षण की सहायता से बी.एड. प्रशिक्षार्थियों पर भूगोल शिक्षण विधि की प्रभावशीलता का मापन किया है।

तालिका क्र. 01

समूह	मध्यमान	मानक विचलन	टी मान
प्रायोगिक समूह (आगमन विधि द्वारा शिक्षण)	65.566	6.49	1.40
नियंत्रित समूह (योजना विधि द्वारा शिक्षण)	68.83	11.08	

.05 स्तर पर t का सारणीमान 2.00 है। गणना द्वारा प्राप्त t का मान 1.4 के निश्चित मान 2.00 से कम है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत नही हो सकता है। परिकल्पना– आगमन विधि एवं योजना विधि की प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नही पाया जायेगा। यह परिकल्पना स्वीकृत हो रहा है। अतः प्रस्तुत अध्ययन द्वारा ज्ञात हुआ कि आगमन विधि एवं योजना विधि द्वारा अध्यापन की प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नही पाया गया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

सिंह, अरूण कुमार, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली

शर्मा, डॉ. गंगाराम एवं भारद्वाज डॉ. सुधीर कुमार, भूगोल शिक्षण, राखी प्रकाशन प्रा.लि. आगरा ।

वर्मा, जे.पी. एवं वर्मा मंजू, भूगोल शिक्षण, द्वारिकाधीश पब्लिशिंग हाउस, मेरठ

महन्ता, डी.डी., सामाजिक अध्ययन शिक्षण, लक्ष्मी बुक डिपो, झांसी गेट, भिवानी

सिंह, हरपाल, भूगोल शिक्षण, राधा प्रकाशन, आगरा।

सिंह भूपेन्द्र एवं मिश्र पतंजलि, इतिहास का शिक्षण एवं अधिगम तथ्यों की समझ और अनुभव का विकास, भारतीय आधुनिक शिक्षा, अंक 2, अक्टूबर 2018

पाण्डेय, अर्पणा, "स्कूल भुवन एन.सी.ई.आर.टी." भूस्थानिक पोर्टल विद्यालयों में आधुनिकतम तकनीक द्वारा भूगोल की खोजपरक शिक्षा, भारतीय आधुनिक शिक्षा, अंक 1, जुलाई 2016